Volume-1, No.2 Aug.-2014, pp.85-87

पंचायती चुनावों में जनसंचार माध्यमों की भूमिका

डॉ0 रामचन्द्र सिंह ,प्रवक्ता–राजनीति विज्ञान विभाग,
शहीद मंगल पाण्डे राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मेरठ उ.प्र. भारत।

सभ्य समाज के विकास में जनसंचार माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। जिस समाज में जनसंचार माध्यम ज्यादा विकसित होते है वहाँ राजनीतिक जागरूकता, लोगों की सक्रियता, विकास, शिक्षा आदि का उच्च स्तर पाया जाता है। उदाहरण के तौर पर हम पश्चिमी देशों अमेंरिका ब्रिटेन फ्रांस प्रदेश आदि को ले सकते हैं। जहाँ के संचार माध्यम हमारे देश की तुलना में ज्यादा विकसित हैं और राजनीतिक सामाजिक ढांचा भी। मानव के सामाजिक जीवन में जनसंचार माध्यमों का महत्व उल्लेखनीय होता है। आज के युग को संचार युग कहा जाता है संचार के माध्यमों के बिना हमारा सामाजिक जीवन क्या होगा? इस प्रश्न के बारे में सोचते ही हमें सामाजिक व्यवस्था ध्वस्त सी नजर आने लगती है। आज संचार के माध्यमों का प्रभाव जीवन के हर क्षेत्र जैसे– विज्ञान, सांस्कृतिक, आर्थिक नैतिक आदि सभी क्षेत्रों पर दिखाई पड़ता है ऐसे में भला राजनीतिक क्षेत्र कैसे अछूता रह सकता है? चुनाव राजनीतिक क्षेत्र का निःसन्देह सबसे महत्वपूर्ण कार्य होता है।

पंचायती चुनावों का संचार के माध्यमों का क्या प्रभाव है? किस तरह की भूमिका संचार माध्यम निभा रहे हैं? ये प्रश्न अधिकांशतः राजनीति विज्ञान के जागरूक अध्ययन कर्त्ताओं के मन में उठते रहते हैं। हाईटेक युग में अब संचार माध्यम अपने मूलभूत उद्देश्यों (सूचना देना, शिक्षित करना, मनोरंजन करना) आदि से कही आगे चलकर मानव जीवन को प्रभावित कर रहे हैं। विधानसभा, लोकसभा एवं पंचायती चुनावों के कार्यक्रमों की अधिसूचना, प्रतिनिधियों इत्यादि की जानकारी लोगों को इन्हीं के माध्यम से मिलती है। हमारे देश की 70 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में ंनिवास करती हैं इसलिए पंचायती चुनाव अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाते हैं क्योंकि वे एक बडे स्तर पर ग्रामीण नागरिकों को प्रभावित करते हैं। गांवों में गरीबी, अशिक्षा, लोगों का भोलापन, राजनीतिक चेतना का अभाव, बेरोजगारी, धन की कमी, स्वास्थ्य व जीवन स्तर सम्बन्धी आदि समस्याएं है। इनसे ग्रसित लोग अधिकांशतः दबंग लोगों के प्रभाव में रहने के कारण स्वयं की अभिव्यक्ति नहीं कर पाते हैं। ऐसे में जनसंचार के माध्यम और भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं क्योंकि वे लोकतन्त्र के चौथे स्तम्भ प्रेस के प्रतीक है और इनका कार्य लोकतन्त्र को मजबूत करना है। संचार क्रान्ति के फलस्वरूप हमारे देश द्वारा कई स्वेदशी उपग्रह अंतरिक्ष में छोडे गए है जिससे देश के हर भाग में इण्टरनेट, टी0वी0, रेडियों, मोबाइल की पहुंच हो गई है। अखबार, पत्रिकाएं, फिल्में धीरे–धीरे सभी जगह उपलब्ध होने लगे हैं। इनका प्रभाव व्यक्ति के राजनीतिक निर्णय पर पड़ता है।

शोध के उद्देश्य –

प्रस्तावित शोध निम्नलिखित उद्देश्यों के अन्तर्गत पूर्ण किया जायेगा–

1. पंचायत चुनावों के सम्बन्ध में सूचनाएं प्राप्त करना।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में राजनीतिक जागरूकता के विकास में जनसंचार माध्यमों की भूमिका का पता लगाना।
3. ग्रामीण मतदाताओं के मतदान व्यवहार पर जनसंचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. पंचायत चुनावों में प्रत्याशियों के प्रचार में जनसंचार माध्यमों की भूमिका का अध्ययन करना।
5. ग्रामीण जनसाधारण के राजनीतिक विकास में जनसंचार माध्यमों की भूमिका का पता लगाना।
6. पंचायतों की कार्यप्रणाली से जनसाधारण को परिचित कराने में जनसंचार माध्यमों की भूमिका का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र

इस शोध का उद्देश्य पंचायत चुनावों पर जन–संचार माध्यमों के प्रभाव को जानना है। यह अध्ययन किसी क्षेत्र में आनुभविक शोध के द्वारा किया जायेगा।

प्रस्तावित शोध के अध्ययन के लिए उत्तर प्रदेश के जनपद ज्योतिबाफूले नगर को चुनाव गया है जो कि मुरादाबाद मंडल के अन्तर्गत आता है। इस क्षेत्र को चुनने का कारण श्रम, धन तथा समय की बचत करना है क्योंकि यह शोधार्थी का गृह जनपद है अतः हम कह सकते हैं कि सुविधा को भी ध्यान में रखा गया है परन्तु शोध कार्य पूरी सावधानी, सजगता, तटस्थता तथा वैज्ञानिक तरीके से करने के लिए शोधार्थी प्रतिबद्ध है।

यह जिला अतीत में मुरादाबाद जनपद का हिस्सा था जो अकबर के शासन काल में दिल्ली क्षेत्र का सम्भल सरकार में सम्बन्धित था।

जिला जे0पी0 नगर मुरादाबाद के पश्चिम में पड़ता है ओर मेंरठ, गाजियाबाद तथा बुलन्दशहर से इसकी सीमाएं मिलती है। यह जनपद प्रसिद्ध समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबाफुले की याद में 24 अप्रैल 1997 को मुरादाबाद की धनौरा, अमरोहा, हसनपुर तहसील को शामिल कर उ0प्र0 गैजेट न0 1077/1 1–5–224/50–5 दिनांक 15/04/1997 द्वारा अस्तित्व में आया। इसका मुख्य कार्यालय जोया रोड पर बने नवीन कलेक्ट्रेट परिसर में है। जिले में 1133 गांव, तीन तहसील 6 ब्लाक 484 ग्राम पंचायत और 11 पुलिस स्टेशन है। इसका क्षेत्रफल 2470 वर्ग किलोमीटर है जिले में छः ब्लाक अमरोहा जोया, गजरौला, गंगेश्वरी, हसनपुर तथा मण्डी धनौरा है।

अध्ययन पद्धति– पंचायत चुनावों में जनसंचार माध्यमों की भूमिका विषयक अध्ययन आनुभाविक आधार पर किया जायेगा अतः अध्ययन के लिए सामाजिक सर्वेक्षण पद्धति ही उपयुक्त होगी। इसके अन्तर्गत जिले के छः विकासखण्डों (हसनपुर, जोया, अमरोहा, गजरौला, गंगेश्वरी, मण्डी धनौरा), में से निर्दशन पद्धति के आधार पर दो ब्लाको का चयन किया जायेगा। चयनित दो विकासखण्डों में से दो–दो गांव दैव निर्देशन (Random Sampling) द्वारा चुनकर कुल 4 गांवों का चयन होगा। प्रत्येक गांव से 25 उत्तरदाताओं को दैव निदर्शन विधि से ही चुनकर कुल 100 उत्तरदाताओं से अनुसूची के द्वारा प्राथमिक आंकडें प्राप्त करके एवं अन्य स्रोतों से सूचनाओं का संकलन किया जायेगा। प्राप्त सूचनाओं के विश्लेषण के पश्चात निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया जायेगा।

आंकड़ा संग्रह एवं विश्लेषण – अध्ययन क्षेत्र से अनुसूची के द्वारा अध्ययनकर्त्ता ने कुल 100 व्यक्तिों से सम्पर्क करके प्राथमिक आँकडों प्राप्त किया। अनुसूची में पंचायत चुनावों में जनसंचार माध्यमों की भूमिका से सम्बन्धित 20 प्रश्न थे जिनका जबाव हाँ तथा नहीं दो विकल्पों के माध्यम से किया गया। ग्रामीण क्षेत्र में अनुसूची का प्रयोग सफल रहा क्योंकि इसके द्वारा अशिक्षित जनसाधारण से भी सचनाएं प्राप्त हुई।

अनुसूची में शोध के उद्देश्य को ध्यान में रखकर प्रश्न तैयार किए गए, जैसे– क्या जनसंचार माध्यम आपके मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

हाँ/नहीं

जनसंचार माध्यमों की पंचायत चुनावों में प्रत्याशियों के प्रचार में सकारात्मक भूमिका है?

हाँ/नहीं

इत्यादि प्रश्न अनुसूची में शामिल रहे।

प्राप्त आंकड़ों का आयु, जाति, व्यवसाय, शिक्षा के आधार पर विश्लेषण किया गया। जिसमें निरक्षरों ने भी जनसंचार माध्यमों की पंचायत चुनावों में भूमिका को स्वीकार किया। आयु आधारित विश्लेषण में युवा वर्ग ने जनसंचार माध्यमों को पंचायती चुनावों में प्रभावी नहीं माना। किसानों ने जनसंचार माध्यमों की प्रभावी भूमिका स्वीकार करते हुए 80 प्रतिशत उत्तर हाँ में दिए।

सभी 100 व्यक्तियों के उत्तरों के हाँ तथा नहीं में विश्लेषण किया गया जिसमें हाँ का प्रतिशत 55 प्रतिशत रहा नहीं का प्रतिशत 45 प्रतिशत रहा। उपरोक्त से स्पष्ट है कि पंचायत चुनावों में जनसंचार माध्यमों की प्रभावी भूमिका है जिसे पंचायत चुनावों की निष्पक्षता, सफलता राजनीतिक, जागरूकता में विकास, इत्यादि के लिए अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष :

पंचायतों को संवैधानिक मान्यता, प्रभावी अधिकारों, बडा कार्य क्षेत्र, पर्याप्त धन की वजह से मिनी संसद भी कहा जाता है। पंचायतों की सक्रियता तथा जवाबदेही भी बढ़ी है जिसे और ज्यादा बढ़ाने की जरूरत है। पंचायतों की पारदर्शिता व निष्पक्षता बनी रहे इसके लिए इनका संचार माध्यमों के दायरे में आना बहुत जरूरी है। साथ ही साथ संचार माध्यमों का प्रभावी होना भी।

आज भी ग्रामीण जनता प्रतिक्रिया किसी भी मुद्दे पर देर से देती है। इसके अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, पिछडापन, इत्यादि कारण हो सकते हैं परन्तु इन सबका, प्रभाव पंचायतों की चुनाव प्रणाली पर भी पडता है। फलस्वरूप गाँव, क्षेत्र तथा जिले के दबंग व पैसे वाले लोग आसानी से चुनावों में भ्रष्टाचार व दबगई के बल पर जीत जाते है बाद में सरकारी योजनाओं व नीतियों का इस्तेमाल वे अपने लिए तथा सहयोगियों के फायदे के लिए करते हैं। आम आदमी इस दुष्चक्र का शिकार होकर अपनी पीड़ाओं, समयाओं की अभिव्यक्ति तक नहीं कर पाता तथा बिना समाधान मिले ही उपेक्षित जीवन जीता रहता है।

लोकतन्त्र में चुनाव राजनीतिक, आर्थिक, साामजिक बदलाव की अहम कडी होता है। अतः इसका सही तरीके से होना बेहद कारगर है। पंचायती चुनावों के उम्मीदवारों की जानकारी, पार्टियों के प्रतिनिधियों की जानकारी लोगों को संचार माध्यमों के द्वारा ही पता चलती है।

इसलिए संचार माध्यमों की भूमिका और अधिक बढ़ जाती क्योंकि वास्तव में पंचायती स्तर पर मीडिया की प्रभावशीलता व सक्रियता की जरूरत है ताकि व्यवस्था में पारदर्शिता आये तथा आम व्यक्ति की समस्याओं का हल हो सके। शोध के निष्कर्ष अवश्य ही ग्रामीण क्षेत्र के

लिए उपयोगी होंगे। पंचायती चुनावों में जनसंचार माध्यमों का प्रभाव अपेक्षित है। इसके ग्रामीणों के राजनैतिक हितों की संरक्षा में वृद्धि होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिश्र स्मिता, मीडिया और साहित्य, नार्थ इण्डिया पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स सोनिया बिहार, दिल्ली एस0एन0 प्रिन्टर्स, दिल्ली, 2008
2. अग्रवाल सुरेश, जनसंचार माध्यम नमन प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, आर0के0 ऑफसेट प्रेस, नवीन शाहदरा दिल्ली, 2005
3. चतुर्वेदी जगदीश, सिंह सुधा, वैकल्पिक मीडिया लोकतन्त्र और नामचोस्की अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्टीब्यूटर्स, दरियागंज नई दिल्ली, 2008
4. राजकिशोर (सम्पादक), समकालीन पत्रकारिता मूल्यांकन और मुद्दे, वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, आर0के0 ऑफसेट, प्रिंटर्स दिलशाद गार्डन दिल्ली 2009
5. बसु दुर्गादास, भारत का संविधान एक परिचय लेक्सिस नेक्सिस बट्टरवर्थ वाधवा नागपुर, रामको प्रेस, इन्डस्ट्रियल एरिया नई दिल्ली, 2010
6. उप्पल श्वेता, (संपादक) NCERT भारत का संविधान सिद्धान्त औरव्यवहार, एन0सी0ई0आर0टी0 कैंपस, नई दिल्ली पैलिकन प्रेस नई दिल्ली, 2009
7. कश्यप सुभाष, हमारा संविधान नेशनल बुक इस्ट, इंण्डिया ग्रीन पार्क नई दिल्ली डी0आर0 प्रिन्टर्स एण्ड कन्वर्टर्स नोएडा यू0पी0, 2008
8. सिंह ओमप्रकाश, संचार माध्यमों का प्रभाव क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी नई दिल्ली, एन0एस0 प्रिंटर्स, पुराना मौजपुर दिल्ली, 1993
9. मेंतलार्त आर्मड मेंतेलार्त मिशेल मिश्र, वंदना (अनुवादक) संचार के सिद्धान्त ग्रन्थ शिल्पी लक्ष्मीनगर दिल्ली एम0एस0 इंडियन इंटर प्राइजेज दिल्ली, 2010
10. बेबर मेंक्स –''दि मेंथेलॉजी सोशल साइंस'' ABD पब्लिशर्स जयपुर सिस्टेक स्कूल ऑफ कम्प्यूटिंग जयपुर, 2004
11. पाण्डेय गणेश, शोध प्रविधि, राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली एशियन ऑफसेट दिल्ली, 2007।